संसार पस्त, हम मस्त - असगर वजाहत

(पांच लघु कहानियां)

1.

नेता जी ने अधिक प्रतीक्षा करने को बेकार समझा और अपने आप को माफ कर दिया। उनके ऊपर जितने मुकदमे चल रहे थे उन सब को उन्होंने अपने आप निरस्त कर दिया। उनकी देखादेखी अधिकारियों ने भी अपने ऊपर जो आरोप लगे थे उन्हें खारिज कर दिया।यह परंपरा आगे बढ़ी। हत्यारों, डाकुओं, लुटेरों ने भी अपने आप को माफ कर दिया। जब इतने लोगों ने अपने आप को माफ कर दिया तब छोटे मोटे लोगों पर जो मुकदमे चल रहे थे वे अपने आप डिलीट हो गए।

अब देश में किसी पर कोई आरोप नहीं है। सब आरोपमुक्त हैं। पूरा देश आरोप मुक्त है। नेता से लेकर जनता तक, किसी पर कोई इल्जाम हैं। किसी ने कोई अपराध नहीं किया है चारों तरफ शांति ही शांति है।

एक हजार साल बाद हमें यह स्वर्ग मिला है। हमारे सभ्य होने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है।

यही देख कर संसार पस्त है और हम मस्त हैं।

2.

हमारे मस्त होने की कोई सीमा नहीं है। पूरे संसार में अब तक कोई भी देश इतना मस्त नहीं रहा होगा या रहेगा जितने हम हैं। मस्ती की सभी हदों को हमने पार कर दिया है। उससे आगे निकल गए हैं। हम इतने मस्त हैं कि छोटी मोटी मार पिटाई पर ही नहीं हम हत्याओं पर भी खुशी मनाते हैं। हमारे सामने जब किसी आदमी को पेड़ में बांधकर बुरी तरह मारा और जलाया जाता है और फिर उसकी गर्दन काट दी जाती है, तब हमें आत्मीय खुशी होती है।

हम अपनी खुशी को छिपाते भी नहीं हैं। डंके की चोट पर सब को बताते हैं कि हम खुश हैं। बहुत खुश हैं। हम हत्या का वीडियो बनाते हैं और पूरे संसार को दिखाते हैं । बताते हैं कि देखो हमसे अधिक शक्तिशाली और कौन हैं । हम संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली हैं। लेकिन उसी समय है जब शत्रु अकेला होता है और हम सौ-पचास होते हैं।

यही देख कर संसार पस्त है और हम मस्त हैं।

3.

मेरा एक इंटरव्यू

प्रश्न और उत्तर

पत्रकार- सर सुना है आप महिलाओं का बड़ा सम्मान करते हैं ।

मैं- आपने ठीक सुना है, मैं महिलाओं का बढ़ा सम्मान करता हूं ।

पत्रकार- कैसे सम्मान करते हैं?

मैं- मैं महिलाओं को उनके पूरे अधिकार देता हूं। मैं महिलाओं के ऊपर किसी भी अत्याचार का, अन्याय का विरोधी हूं। मैं चाहता हूं ऐसा कानून बने कि महिलाएं स्वतंत्र रूप से सम्मानित जीवन जी सकें।

पत्रकार- सर यह तो बहुत बड़ी बात है आप तो बधाई के पात्र हैं। आदर्श पुरुष हैं।

मैं- हां इसमें कोई संदेह नहीं मैं आदर्श पुरुष हूं।

पत्रकार - आप अपनी पत्नी का भी सम्मान करते हैं ?

मैं - मेरी पत्नी? वह अपना सम्मान स्वयं कर लेती है। मुझे उनका सम्मान करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

.....यही देख कर संसार पस्त है और हम मस्त हैं।

4.

भाई साहब आप लोग चाहे अच्छा मानो चाहे बुरा मानो, सच्ची बात यह है कि मैं अपने दुश्मनों के इलाके में निकल जाता हूं और उनके सिर काटकर ले आता हूं।यह काम में बहुत वीरता, समझदारी, चतुराई और होशियारी से करता हूं। अब तक मैं दुश्मनों के बहुत से सिर काट लाया हूँ। आप पूछेंगे मैं ऐसा क्यों करता हूं ? इसलिए करता हूं कि मेरे दुश्मन भी यही करते हैं । वे मेरे इलाके में आ जाते हैं और मेरे लोगों के सिर काटकर ले जाते हैं। मैंने कई सौ सिर काट लिए हैं क्योंकि मैं अपने एक सिर के बदले दुश्मन के दस सिर काटता हूं ।

कुछ ही दिनों में मैं एक कल्ला मीनार बनाऊंगा । कल्ला मीनार आप जानते हैं क्या होती है? सिरों को काटकर उनसे एक मीनार बनाई जाती बनाई जाती है उसे कल्ला मीनार कहते हैं। मैं लगातार अपने दुश्मनों के सिर काटता रहूंगा। मेरे दुश्मन बहुत हैं इसलिए मुझे लगता है कि सिर काटने का काम चलता रहेगा और...और...और अगर दुश्मन कम पड़ गए ,दुश्मन न रहे तब भी मैं सिर काटने के काम को नहीं छोडूंगा क्योंकि इस काम में मुझे बहुत मजा आने लगा।..... यही देख कर संसार पस्त है और हम मस्त हैं।

5.

मेरा एक दूसरा इंटरव्यू प्रश्न और उत्तर

पत्रकार- संसार में यह खबर बहुत तेजी से फैल गई है कि आपने नया आदमी बना लिया है जो गट्टा पारचा का आदमी है।

मैं- यह खबर ठीक है पर इसमें जानकारी कम है।

पत्रकार - क्या कम है।

मैं - मैंने गट्टा प्लास्टिक का आदमी बनाया नहीं। आदमी को प्लास्टिक का आदमी कर दिया है।

पत्रकार - वह कैसे?

मैं- यही तो मेरा कमाल है । आदमी वही है जो भगवान ने बनाया है लेकिन मैंने उसे ऐसा कर दिया है अब वह मेरा बनाया हुआ। मैं जब चाहता हूं वह हंसता है। मैं जब चाहता हूं वह रोता है मैं जब चाहता हूं वह गुस्से में आ जाता है मैं जब चाहता हूं वह खुश हो जाता है। मैं जब चाहता हूं वह अपने आप को विकसित महसूस करने लगता है। मैं जब चाहता हूं वह अपने आप को सुरक्षित महसूस करने लगता है, मैं जब चाहता हूं वह अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगता है। मैं जब जो चाहता हूं तब वह वैसा कर देता है। उसे बनाया तो ऊपर वाले ने है लेकिन अब वह मेरा बनाया हुआ है।

पत्रकार- यह काम आपने कैसे किया है?

मैं - यही सोच कर संसार पस्त है और मैं मस्त हूं।

भाजपा को खटकने लगे हैं किसान

उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को किसान खटक रहे हैं। आलू का उचित समर्थन मूल्य न मिलने पर किसानों ने कई टन आलू मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सरकारी आवास के सामने फेंक दिया। इसके अलावा विधानसभा मार्ग, वीवीआईपी गेस्ट हाउस के पास और लखनऊ शहर के 1090 चौराहों पर आलू फेंके गए। मुख्यमंत्री किसानों का कुछ नहीं कर पाए तो पांच पुलिस वालों को निलंबित कर दिया। पूरे महकमे को हिदायत दी गई कि खबरदार लखनऊ में कोई किसान अब प्रदर्शन के लिए नज़र नहीं आना चाहिए। तबसे बेचारे बस रात-दिन किसानों पर नज़र रखने के काम में जुटे रहते है।

यूपी का किसान भाजपा सरकार की किसान विरोधी नीति से बेहद नाराज है। राष्ट्रीय किसान मंच के अध्यक्ष शेखर दीक्षित का कहना है कि सरकार की कथनी और करनी में अंतर है। हालात नहीं सुधरे तो किसानों ने अभी तो आलू लखनऊ की सड़कों पर फेंका है, कल गन्ना किसान यही काम कर सकते हैं और परसों गेहूं एवं धान के किसान ऐसा कर सकते हैं। दीक्षित ने कहा कि अगर हालात नहीं सुधरे तो उत्तर प्रदेश में मंदसौर जैसी हिंसा हो सकती है। हालांकि भाजपा सरकार ने आलू फेंकने की घटना को शरारती तत्वों का काम बताया।

जिस तरह महाराष्ट्र के भीमा कोरेगांव, पुणे और मुंबई में हुई हिंसा को बाहरी तत्वों का हाथ बताकर पल्ला झाड़ लिया यानी उसने महाराष्ट्र में दलितों और मराठों के संघर्ष को पूरी तरह नजरन्दाज कर मामला दूसरों पर डाल दिया। ठीक यही बात आलू फेंकने की घटना में की गई। योगी सरकार ने इसे किसानों का गुस्सा न बताकर या सच न बताकर कहा कि आलू फेंकने में शरारती तत्वों का हाथ है। राजनीति में पल्ला झाड़ना सबसे आसान है। पीड़ति कुछ भी कहते रहें, उस घटना को आप शरारती तत्वों से जोड़कर जिम्मेदारी से अलग हो सकते हैं। इस तरह लखनऊ में आलू बिखेरने वाले किसान गोया शरारती तत्व हो गए।...और ये शरारती तत्व इतने मजबूत निकले की योगी सरकार की पुलिस की आंखों में धूल झोंककर पूरे लखनऊ में आलू बिखेरकर अपने गांवों में चले गए। खैर, जिन भक्त लोगों ने चश्मा लगा रखा है, उन्हें भी किसानों की परेशानी समझ में नहीं आएगी।

विडंबना देखिए कि योगी सरकार प्रदेश की तमाम सरकारी बिल्डिंगों को भगवा रंग से रंग रही है। शौचालय तक भगवा रंग में रंग लिए गए हैं। यह समझ से बाहर है कि बिल्डिंगों को भगवा रंग में रंगने से वो किसका भला करना चाहते हैं। क्या सरकारी भवनों को भगवा रंग में रंगने से किसानों को उनकी फसल का वाजिब दाम मिल जाएगा, क्या प्रदेश के बेरोजगारों का रोजगार मिल जाएगा, क्या सरकारी स्कूलों की हालत सुधर जाएगी, क्या महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों में कमी आ जाएगी, क्या यूपी में कोई गरीब रात को भूखे पेट नहीं सोएगा।...हां अगर भगवा रंग पोतने से किसानों को कुछ हासिल हो जाए तो फिर किसानों का ही मुझ जैसों का घर भी भगवा रंग में पोत डालिए। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शनिवार को मेरठ जिले में थे। वहां उनसे पूछा गया कि आलू बिखेरा गया है, आप क्या कहते हैं, वो बोले कि सरकार आलू पैदा करने वाले किसानों के साथ है लेकिन वह यह कहना नहीं भूले कि आलू बिखेरना एक राजनीतिक शरारत है। मतलब कुल मिलाकर दोषी किसान हैं और योगी के रुख से तो लगता है कि किसानों के प्रति भाजपा सरकार की जरा भी हमदर्दी नहीं है।

अब देखिए भाजपा में वाकई किसी के पास किसानों के लिए चिंता करने का समय नहीं है। योगी का चेहरा तो सारे मामले में सामने आ ही गया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह असम में कामाख्या देवी मंदिर के दर्शन करने पहुंचे हैं। क्योंकि निकट भविष्य में उत्तर पूर्व के राज्यों में विधानसभा चुना है तो वह अपनी चुनावी यात्रा शुरू करने से पहले कामाख्या मंदिर गए और तब मेघालय के लिए रवाना हुए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का जिक्र ही क्या करना, वो बेचारे तो रात-दिन किसानों की चिंता में दुबले हुए जा रहे हैं लेकिन कमबख्त यह राज्यों की सरकारें हैं जो किसानों की सुध नहीं ले रही हैं। कृपया इसमें से उत्तर प्रदेश का नाम निकाल दें। भाजपा के मुताबिक किसान वहीं परेशान हैं जहां भाजपा की सरकारें नहीं हैं।

तमिलनाडु के किसान याद हैं

अगर आप लोगों को जंतर-मंतर पर एक महीने तक आंदोलन करने वाले किसानों की कुछ याद हो तो....वो किसान भी केंद्र की भाजपा सरकार को खटकने लग गए थे। गोदी और बिकाऊ मीडिया ने भी जब उनकी खबर नहीं ली तो ख़बर बनने के लिए उन्होंने उल्टी सीधी हरकतें कीं। मोदी सरकार ने इसके बाद दिल्ली पुलिस से कहकर जंतर-मंतर पर होने वाले प्रदर्शनों पर ही रोक लगवा दिया।

चलिए आलू उत्पादक किसानों से आगे बढ़ते हैं।

देश की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमानित आंकड़े केंद्र सरकार ने खुद जारी किए हैं। अभी तक सरकार तमाम रेटिंग एजेंसियों की आड़ में अपनी पीठ थपथपा रही थी और आर्थिक वृद्धि दर के आंकड़ों को मनमाने ढंग से व्याख्या करके पेश कर रही थी।नए आंकड़ों के मुताबिक नई परियोजनाओं और नए निवेश में गिरावट आयी है। असंगठित क्षेत्र नोटबंदी के दुष्प्रभावों से जूझ रहा है. रोजगार सृजन नाममात्र का है, निर्यात कम हो रहा है और विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि नीचे आ गई है। कृषि क्षेत्र को भारी नुकसान हुआ है और ग्रामीण क्षेत्रों में भारी निराशा है। देश के तेज गति से वृद्धि करने के सरकार के भारी-भरकम दावे हवा में उड़ गए हैं। हालिया सामाजिक असंतोष इसी आर्थिक सुस्ती का जीता जागता नतीजा है जिसे सरकार छिपाना चाह रही है। वित्त वर्ष 2015-16 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर आठ प्रतिशत थी जो 2016-17 में 7.1 प्रतिशत पर आ गई। 2017-18 में इसके 6.5 प्रतिशत पर आ जाने का अनुमान है। इससे साबित होता है कि आर्थिक वृद्धि सुस्त पड़ रही है। आर्थिक गतिविधियों और वृद्धि में गिरावट का मतलब लाखों नौकरियां जाना है। जहां जीडीपी वृद्धि के 2016-17 के 7.1 प्रतिशत की तुलना में 2017-18 में 6.5 प्रतिशत पर आने का अनुमान है, वहीं वास्तविक सकल मूल्यवर्धन (जीवीए) के भी 2016-17 के 6.6 प्रतिशत की तुलना में 2017-18 में 6.1 प्रतिशत रहने का अग्रिम अनुमान है। खुदरा महंगाई नवंबर में बढ़कर 15 महीने के उच्चतम स्तर 4.88 प्रतिशत पर पहुंच गई है। औद्योगिक उत्पादन अक्तूबर में गिरकर तीन महीने के निचले स्तर 2.2 प्रतिशत पर आ गया है। निवेश की तस्वीर धुंधली बनी हुई है। विनिर्माण क्षेत्र में सबसे बड़ी गिरावट आई है और राजकोषीय घाटा जीडीपी का 3.2 प्रतिशत रहने के बजटीय अनुमान से आगे निकल जाने की आशंका है।

...तो देश की आर्थिक स्थिति और किसानों की हालत एक जैसी है। अब आप भगवा रंग से बिल्डिंग पोतते रहें या दलितों को पीटकर ध्यान भटकाने की कोशिश करते रहें, देश का भला नहीं होने वाला। हां, डींगें मारने के लिए सबकुछ है।

सैनिक मरने के लिए हैं, बोले भाजपा सांसद नेपाल सिंह

दिल्ली (मजदूर मोर्चा, नवमीत नव) बीजेपी के एक माननीय सांसद हैं नेपाल सिंह। बड़बोले हैं। अब बीजेपी के हैं इसलिए बड़बोले हैं या फिर बड़बोले हैं इसलिए बीजेपी में हैं यह बात पक्के तौर पर पता नहीं चल पाई है। बहरहाल माननीय जी ने ताज़ातरीन बयान सेना के जवानों को लेकर दिया है। माननीय जी का कहना है कि सेना के जवान तो मरते ही हैं। सही बात है। सेना तो होती ही मरने मारने के लिए है। वैसे भी कौनसा इनके घर के लोग सेना में भर्ती होते हैं। माननीयों के बच्चे तो या तो माननीय ही बनते हैं या बिज़नस करते हैं या फिर विदेशों में सैटल हो जाते हैं।

एक जानकार हैं। उनका कहना है कि देश के युवाओं में देश के लिए वह प्रेम नहीं रहा जो पहले होता था। यह कहते कहते उनकी आंखें भर आयी और गला रुंध गया। फिर दो पैग अंदर उतारे तब जाकर गला खुला और आंखें ठीक हुई। तीसरे पैग के बाद बोले कि लड़के का अमेरिका जाने का इंतज़ाम हो जाये तो वे भी राजनीति पर सम्पूर्ण ध्यान दे पाएं। उम्मीद है कि अगले विधानसभा चुनाव में बीजेपी या कांग्रेस की टिकट मिल जाएगी।

यह हाल भावी माननीयों के हैं। अभी कुछ दिन पहले की बात है। एक भूतपूर्व माननीय मिले। कहने लगे कि पहले वे कामरेड थे। मैंने पूछा कि अब नहीं हो? तो बोले कि अब तो बिज़नस है लेकिन दिल से अभी भी कामरेड हैं। फिर आरएसएस और बीजेपी की बात चली तो दिल के अंदर का कामरेड बाहर कूद आया। बोले इन्होंने देश का नाश कर रखा है। यहां नगर निगम में बीजेपी जीत गई है लेकिन काम कुछ करते नहीं हैं। ऊपर से महिला को काउंसिलर बना रखा है। अब आप ही बताइए कि महिला क्या करेगी? महिलाओं का तो वैसे ही आईक्यू पुरुषों से कम होता है। फिर बोले कि हम तो भगत सिंह के विचारों को मानते हैं। मैं सोचने लगा कि अच्छा हुआ कि भगत सिंह आत्मा परमात्मा को नहीं मानते थे, वरना यह सुनकर उनकी आत्मा जरूर चीत्कार कर उठती।

खैर बात बीजेपी के माननीय सांसद नेपाल सिंह की हो रही थी। माननीय जी ने पहले तो साढ़े 55 इंच का सीना (साढ़े 55 इसलिए क्योंकि इससे ज्यादा का सीना सिर्फ एक ही व्यक्ति का हो सकता है, भले ही आप कितना भी फुला लो) फुला कर टिप्पणी कर दी। लेकिन जब उन्हें लगा कि बड़बोलापन ज्यादा हो गया तो सफाई दी कि उनका वह मतलब नहीं था जो निकाला गया। उनका मतलब था कि वैज्ञानिक ऐसे आविष्कार में लगे हैं जो सैनिकों को गोली लगने ही न दे। जाहिर है। माननीय जी का मतलब यही रहा होगा। लोग ही बात नहीं समझते। भक्त होते तो तुरंत समझ जाते। भक्तों की खोपड़ी में गौमाता का पवित्र गोबर होता है न? ऐसी चीजें समझने में आसानी रहती है।

खैर चलो। वैज्ञानिक तो यह आविष्कार कर भी देंगे जो सैनिकों को बचा लेगा। माननीयों को भी बचा लेगा। लेकिन कभी कभी मैं सोचता हूँ कि भूख बीमारी से मरती इस देश की गरीब जनता को कौन बचाएगा? सर्दी में अलाव तो उसे ही जलाना पड़ता है जिसे सर्दी लग रही हो। गर्म बिस्तर में लेटे हुए माननीय थोड़े ही यह काम करेंगे।

बैंक वसूल रहे हैं 'ग़रीबी टैक्स' !

खाते में एक सीमा से नीचे रुपये रखने पर जुर्माना - यह काम पहले सिर्फ विदेशी बैंक करते थे । वे गरीबों को अपने से दूर रखना चाहते हैं और अमीरों को 'खास' होने का रुतबा देना । मूल बात यह कि तिल से ही तेल निकलेगा, इसे वे जानते हैं ।

लेकिन मोदी ने बैंकों की पेराई मशीन में अब देश के गरीबों को भी ठूँस दिया हैं । ये भूसे से तेल निकालने के मास्टर है । कहते हैं भूसे का तेल कोलेस्ट्रौल-फ्री होता है, इसीलिये ज्यादा स्वास्थ्यवर्धक भी है ! ये अमीरों को कोरा रुतबा नहीं ठोस, स्वास्थ्यप्रद माल देना चाहते हैं । इसे वे परजीवियों की ढीली पड़ रही नसों में तरावट पैदा करने का, अर्थ-व्यवस्था को चंगा करने का काम कहते हैं ।

मोदी जब से सत्ता पर आए हैं, हर वो उपाय कर रहे हैं जिनसे आम गरीब लोगों की जेबें ख़ाली रहे । नोटबंदी, जीएसटी, किसानों की लूट - सबका यही लक्ष्य रहा हैं । डिजिटलाइजेशन के नाम पर लोगों को बैंकों में खींचने का भी एक प्रमुख उद्देश्य बैंकों को कमाई कराना और उनके जरिये अमीरों के एनपीए के नुक़सान की भरपाई करना है । इसमें खास तौर पर एक सीमा से कम रुपये रखने पर जुर्माना तो घनघोर अकाल के समय लोगों से अधिक से अधिक लगान वसूलने जैसा है ।

एक साल में भारत के बैंकों ने 29 करोड़ ग़रीब खाताधारकों से सिर्फ बैंक में कम राशि रखने के अपराध में जुर्माने के एवज़ में 1771 करोड़ रुपये वसूल किये हैं।

क्यों न बैंकों के इस जुर्माने को मोदी का खास 'गरीबी टैक्स' कहा जाए ? पिछले दिनों एक फिल्म की क्लिपिंग काफी लोकप्रिय हुई थी जिसमें अमजद खान राजा के रूप में अपने कारिंदों के साथ रास्ते चलते ग़रीब आदमी से इसलिये भी टैक्स माँग रहा था कि तुम ग़रीब हो ! मोदी का टैक्स वसूली अभियान और आम जनता की क़ीमत पर बैंकों के रक्षार्थ किये जा रहे काम देख कर लगता है - क्या अमजद खान (गब्बर सिंह) का वह प्रेत इनमें प्रवेश कर गया है !